सत्याग्रहः एक पुनरावलोकन

डॉ0 राम कुमार गुप्ता

मनुष्यों के बीच होने वाले टकरावों का शांतिपूर्वक हल कर पाने की क्षमता एक शांतिपूर्ण संस्कृति की अनिवार्य शर्त है। अधिकांश ऐतिहासिक संस्कृतियां इस दृष्टि से अक्षम ही प्रतीत होती है। अतः यह चुनौती भविष्य की संस्कृति के निर्माण की है। पिछली सदी में महात्मा गांधी द्वारा प्रदत्त सत्याग्रह की अवधारणा इस दिशा में एक प्रयास माना जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान संदर्भ में एक शान्तिपूर्ण संस्कृति के निर्माण के लिये सत्याग्रह की प्रासंगिकता पर हम पुनर्विचार करें। यही इस छोटे से लेख का उद्देश्य है। अतः हम गांधी द्वारा निर्धारित सत्याग्रह के स्वरूप का विवरण न देकर उस पर लगाये गये आरोपों के मद्द नजर उसका मूल्यांकन करने का प्रयास करेंगे। किन्तु इसके पहले शान्ति और संस्कृति सम्बन्धी अपनी समझ को स्पष्ट करना भी अपेक्षित है।